पवनस्यानुकूलत्वात्प्रार्थनासिद्धिशंसिनः ।

रजोभिस्तुरगोत्कीर्णैरस्पृष्टालकवेष्टनौ ।।42।।

अन्वय प्रार्थनासिद्धिशंसिनः पवनस्य अनुकूलत्वात् तुरगोत्कीर्णैः रजोभिः अस्पृष्टालकवेष्टनौ (जग्मतुः)।

अनुवाद (पुत्र प्राप्ति के) मनोरथ की सफलता को सूचित करने वाली वायु के अनुकूल होने से (जिस दिशा में राजा दिलीप का रथ जा रहा था उसी दिशा की ओर वायु की गति होने से) घोड़ों के खुरों से उठी हुई धूल रानी सुदक्षिणा के बाल तथा दिलीप की पगड़ी को छू (मैला कर) नहीं सकती थी।

टिप्पणियां

अनुकूलत्वात् अनुगतः कूलमिति अनुकूलः (प्रादि समास); (वायु के) अनुकूल होने के कारण।

विशेष यात्रा करते समय जिस दिशा में हम जा रहे हों, उसी दिशा की ओर यदि वायु चले तो इसे कार्यसिद्धि का शकुन माना जाता है। वायु की अनुकुलता यह संकेत देती है कि यात्री जो कार्य करने जा रहा है, वह सफल होगा। राजा दिलीप भी पुत्रकामना से वशिष्ठ ऋषि के आश्रम की ओर प्रस्थान कर रहे थे और वायु भी उसी दिशा की ओर बह रही थी जो इस बात की सूचक थी कि महाराज दिलीप की मनोकामना पूर्ण होगी। जिस दिशा में हम जा रहे हों उसी दिशा की ओर वायु का चलना वायु का अनुकूल होना है। जिस ओर दिलीप जा रहे थे वायु भी उसी ओर जा रही थी अतः उनके

अनुकूल थी। ऐसे ही आनुकूल्य का प्रदर्शन वशिष्ठ महामुनि के दिलीप को आदेश देने पर नन्दिनी के आश्रम में लौट आने पर होता है। आनुकूल्य शुभ लक्षण है तथा प्रातिकूल्य अशुभ।

प्रार्थना प्रार्थनायाः सिद्धिः (षष्टी तत्पुरुष), प्रार्थनासिद्धिं शंसितुं शीलमस्यास्ति इति। 'पवनस्य' का विशेषण है। वह वायु जो राजा दिलीप की मनोकामना की सफलता को सूचित कर रही थी।

अस्पृष्टा न स्पृष्टमिति अस्पृष्टम् (नञ् तत्पुरुष), अलकाश्च वेष्टनञ्च इति अलकवेष्टने (द्वन्द्व समास), अस्पृष्टे अलकवेष्टने ययोः तौ (बहुव्रीहि समास), अस्पृष्टालकवेष्टनौ। रानी और राजा जिनके बाल और पगड़ी (धूल द्वारा) स्पर्श नहीं किए गए थे। वायु अनुकूल थी। अतः धूल उड़ने से रानी के बाल और राजा की पगड़ी मैली नहीं हुई।

अलकाः बाल (रानी के)। वेष्टनम् पगड़ी (राजा की)।